गोवा की माननीय राज्यपाल, श्रीमती मृदुला सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक "परितप्त लंकेश्वरी" के भोपाल में 11 जुलाई, 2015 को विमोचन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

श्रीमती मृदुला सिन्हा जी द्वारा लिखित पुस्तक 'परितप्त लंकेश्वरी' के विमोचन के लिए आमंत्रित किया जाना मेरे लिए बहुत सम्मान और गौरव की बात है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर मैं मृदुला जी को बधाई देती हूँ। **उनकी श्रेष्ठ रचनाओं की माला रूपी श्रृंखला में ये नवीनतम मोती निश्चय ही अमूल्य है।** सुप्रसिद्ध और श्रेष्ठ लेखिका श्रीमती मृदुला जी की यह पुस्तक हमारी महान साहित्यिक परम्परा के प्रति एक और योगदान है।

इस पुस्तक के मुख्य पात्र 'मंदोदरी' से हम सभी भली भांति परिचित हैं और हम सब आज भी मंदोदरी की कहानी बड़े चाव से सुनते हैं। श्रीमती सिन्हा ने अपनी साहित्यिक कृति 'परितप्त लंकेश्वरी' में रामायण में चित्रित एक महान महिला के जीवन का सबसे प्रभावशाली चित्रण किया है। **आजकल की जल, थल और नभ पर कदम रखती युवतियों के लिए इस ऐतिहासिक पात्र मंदोदरी की वीरता, विद्वता, व्यावहारिकता आधारित जीवन-संघर्ष को उकेरना वास्तव में प्रेरणास्पद है।**

पूरी प्रतिबद्धता और मेहनत से शोध करके लिखी गई इस पुस्तक में मंदोदरी के साहस और बुद्धिमता का ज्ञानवर्धक विश्लेषण किया गया है। इससे प्रत्येक व्यक्ति को सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। इस पुस्तक के माध्यम से हम एक सुन्दर और चित्ताकर्षक महिला, मंदोदरी, जिसकी कहानी हम सबके लिए बहुत रोचक है, को जान-समझ सकते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस क्षेत्र में श्रीमती सिन्हा की शानदार लेखन-कला का मुकाबला करने वाली कृतियाँ बहुत ही कम होंगी।

विदुषी लेखिका ने अपनी विभिन्न कृतियों के माध्यम से हमारी भारतीय परम्परा की महिला नायिकाओं में अग्रणी और अपने अनुभव तथा धर्मपरायणता के लिए विख्यात महान पात्रों का चित्रण किया है। **इन पात्रों में रामायण की नायिका सीता; महाभारत की दृढ़निश्चयी द्रौपदी; विलक्षण बुद्धि से सम्पन्न और रावण की पत्नी मंदोदरी; बाली की पत्नी तारा; और सत्यवान की पत्नी सावित्री शामिल हैं।** मंदोदरी को भारतीय पौराणिक साहित्य की पंचकन्याओं, अर्थात पांच महान महिलाओं में से एक माना जाता है। उनकी कहानी हमें यह याद दिलाती है कि कुछ लोगों के आचरण के कारण उस समूह की बदनामी होने पर भी व्यक्ति विशेष की महानता पर कलंक नहीं लगता। बल्कि करोड़ों भारतीयों के मन-मस्तिष्क पर मंदोदरी के व्यक्तित्व का इतना अधिक प्रभाव है कि आज भी उसका नाम सभी बुराइयों से बचने और मुक्ति पाने का प्रतीक हैं।

श्रीमती सिन्हा ने मंदोदरी के सशक्त चरित्र का चित्रण बहुत कुशलता से किया है जो ऊपर से अशांत, परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से धीर-गंभीर है। **सौंदर्य की प्रतिमूर्ति और करुणामयी मंदोदरी रावण के आचरण से जीवनभर आहत रहीं। मंदोदरी रावण को धर्म के मार्ग पर चलाने के लिए निरंतर आजीवन प्रयत्नशील रहीं, पर होनी को कुछ और मंजूर था। अपनी अंतिम श्वास तक वे रावण के बुरे कर्मों को सहती रहीं। आदरणीय मृदुला जी के इस उपन्यास में मंदोदरी के मनोभावों को उत्कृष्ट रूप से दिखाया गया है। धर्म, सत्य और कर्तव्यपरायण मार्ग पर चलते हुए मंदोदरी ने एक पत्नी, मां और नारी की अपनी भूमिका को आदर्श रूप से निभाया। मंदोदरी के चरित्र की विशेषता रही है कि जीवनपर्यन्त विषम परिस्थितियों में भी वह अपनी सही राह से भटकी नहीं और अपने पति रावण को हर मोड़ पर सही राह दिखलाती रही।**

मृदुला जी ने उस महान महिला तथा अच्छाई और बुराई में भेद करने के उसके जन्मजात गुण का बहुत कुशलतापूर्वक चित्रण किया है। संकट के समय में भी, मंदोदरी जानती

थी कि उसे जो सही लगता है, उसे कैसे करना है। मंदोदरी के जीवन का प्रत्येक पहलू सबका मन मोह लेगा और इस पुस्तक में लेखिका द्वारा उद्धृत विस्तृत स्रोतों से यह पुस्तक साहित्य के क्षेत्र में एक अद्वितीय कृति सिद्ध होगी। मंदोदरी का स्थान हमारे पौराणिक आख्यानों में स्त्रियों के पांच सर्वश्रेष्ठ नामों में से एक है।

मैं यहां कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करना चाहती हूँ :

अहिल्या द्रौपदी कुंती तारा मंदोदरी तथा

पंचकन्या स्मर्नित्यम महापातक नाशकाः

एक महाकाव्य के अनछुए और प्रायः उपेक्षित पहलुओं के प्रति लेखिका की रूचि और दिलचस्पी उल्लेखनीय है। रामायण के सन्दर्भ में उन्होंने जिस प्रकार मंदोदरी का चरित्र-चित्रण किया है और एक महाकाव्य की पटकथा के एक छोटे से पात्र को महान पात्र बनाया है, उससे लेखिका की प्रतिभा का पता चलता है। गौण पात्र की कहानी को प्रधानता देकर और बड़े आश्चर्यजनक ढंग से उसके इर्द-गिर्द एक नई तरह की कहानी बुनकर लेखिका ने उस काल के रोचक पहलू को फिर से जीवंत कर दिया है और यह भी दर्शाया है कि अपने सृजनात्मक कौशल से वह कितने सहज ढंग से एक ऐसे पात्र के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शा सकती हैं जिसके बारे में आमतौर पर बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

श्रीमती मृदुला जी बहुत जानी-मानी सुप्रसिद्ध लेखिका होने के साथ-साथ सार्वजनिक जीवन में भी बहुत सक्रिय हैं और उन्होंने अपनी रूचि के क्षेत्रों में अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने विभिन्न विषयों पर और विविध विधाओं में 46 से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी साहित्यिक कृतियों में दूरदर्शन पर दिखाई गई लघु फिल्म, **ज्यों मेहँदी का रंग, नई देवयानी, घरवास, सीता पुनि बोली, सावित्री, अतिशय** आदि अनेक पुस्तकें शामिल हैं। उन्होंने श्रीमती राजमाता सिंधिया की एक जीवनी भी लिखी है। उनके कथा संग्रह में **साक्षात्कार, एक दिए की दिवाली, स्पर्श की तासीर, अपना जीवन** आदि शामिल हैं उनके निबंध संग्रह में **आईने के**

सामने, बच्चों के लिए बिहार की लोक कथाएं शामिल हैं। उनकी लिखी पुस्तकों, **दत्तक, उधार का सूरज और खेल-खेल में** पर लघु चित्र फीचर भी बनाये गए हैं ।

श्रीमती सिन्हा भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित कल्याण संबंधी सभी कार्यक्रमों से सम्बद्ध राष्ट्रीय निकाय, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्ष रही हैं। इस बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में उनका योगदान बहुत प्रेरणादायी रहा है। इसके अलावा उन्होंने जय प्रकाश नारायण द्वारा चलाई गई समग्र क्रांति में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। उल्लेखनीय है कि उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलनों में **साहित्य भूषण सम्मान, राष्ट्रीय शिखर सम्मान और पंडित दीन दयाल उपाध्याय सम्मान** जैसे अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें विश्वन्तंत्र हिंदी समिति, न्यूयॉर्क द्वारा सम्मानित किया गया है। यह भी अत्यंत सराहनीय बात है कि 21 शोध छात्रों को उनकी साहित्यिक कृतियों पर आधारित थीसिस के लिए पीएचडी डिग्री मिली है। इससे साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान और एक प्रकांड विद्वान के रूप में उनकी ख्याति का पता चलता है। उनके प्रेरणादायी व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ने समाज को दिशा दी है।

विदुषी लेखिका ने अपनी पुस्तक की विषयवस्तु-महाकाव्य रामायण की नायिका के जीवन, काल और आदर्शों का चित्रण बहुत उत्साह और जोश से किया है। मुझे लगता है कि इस पुस्तक में पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों को कैसे निभाया जाए, इस महत्वपूर्ण मुद्दे का वर्णन बहुत बुद्धिमता से किया गया है। यह पुस्तक रामायण की प्रसिद्ध नायिकाओं के प्रति प्रेम और स्नेह का सर्वोत्तम प्रतीक है। मैं समझती हूँ कि जो व्यक्ति मंदोदरी के जीवन, उसके काल के बारे में प्रामाणिक जानकारी चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक बहुत लाभप्रद होगी।

परितप्त लंकेश्वरी का विमोचन करते हुए मुझे हार्दिक खुशी है। मैं हृदय की गहराइयों से मृदुला सिन्हा जी को पुनः बधाई देती हूं और प्रभात प्रकाशन को इस बेहतरीन पुस्तक के प्रकाशन के लिए साधुवाद देती हूं। यह पुस्तक निश्चय ही पाठकगण को जीवनयात्रा की

विभिन्न परिस्थितियों में सामंजस्य बनाकर आगे बढ़ने को प्रेरित करेगी। साहित्य जगत को अपनी ओजस्वी लेखनी से उत्कृष्ट योगदान देने के लिए मृदुला जी का धन्यवाद व अभिनन्दन।

धन्यवाद ।